परिशिष्ट

परिशिष्ट 1

संजीव से प्राप्त प्रश्नावली के उत्तर

प्रश्न 1 आपका बचपन कहाँ और कैसे बीता?

❑ मेरा बचपन सुलतानपुर के अपने गाँव बाँगरकलाँ जौनपुर की अपनी ननिहाल दुमदुमा (उत्तर प्रदेश में) तथा चार वर्ष की उम्र से पश्चिम बंगाल के कुलटी नामक औद्योगिक कस्बे में बीता। वे गरीबी के दिन थे। खाने-पहनने और पढ़ने सब जैसे-तैसे। पाँचवी की कक्षा में एडमीशन टेस्ट देकर केन्दुआ हाईस्कूल से विधिवत शिक्षा। बचपन में फुटबॉल, कबड्डी, गिल्लीडंडा, कंचे आदि के खेल और तुकबंदी की अंताक्षरी। प्रारंभ से ही साहित्य की प्रतियोगिता, वाद-विवाद में अंशग्रहण करता। क्लास में फर्स्ट आता मगर मैट्रिक की परीक्षा में द्वितीय आया। मेरी राय से कइयों की राय न मिलती। ईगोइस्ट और भावुक लड़का हुआ करता था।

प्रश्न 2 आपकी शिक्षा कहाँ हुई?

❑ शुरू में शिवजी के चौरे आदि पर एक तरह से फुटपाथी, 5 से 10 केन्दुआ हाईस्कुल, बी.एस्सी. वर्धमान विश्वविद्यालय (बी.बी. कॉलेज) से, फिर ए.आई.सी. (एम.एस्सी. डिग्री विश्लेषणात्मक रसायन के समकक्ष) इन्स्टीट्यूशन ऑफ केमिस्ट, कलकत्ते से। शिक्षा-दीक्षा विज्ञान की ही रही। हिंदी-अंग्रेजी साहित्य मात्र ग्यारहवीं कक्षा तक।

प्रश्न 3 मैं आपके परिवार के बारे में जानना चाहती हूँ।

❑ मेरे परिवार में पत्नी प्रभावती देवी नाममात्र की शिक्षित है। चार बेटियाँ मंजू, अंजू, अनिता, इंदु और एक बेटा संतोष है। मंजू mentally retarded है। परिवार में अंजू और उसकी बेटी विपश्यजा साथ रहते हैं। निम्नमध्य वर्ग से मध्यवर्ग की ओर उठता परिवार है। माँ-पिताजी एवं दो बड़े भाई दिवंगत हो चुके हैं। बहन 72 वर्ष की विधवा, अपने घर रहती है।

प्रश्न 4 आप अपनी नौकरी के बारे में कुछ बताइए।

❑ सन् 1965 से 2002 तक मैं इण्डियन आयरन सेन्ड स्टील कं. कुलटी में

रसायज्ञ रहा। कुछ दिन 'अक्षर पर्व' का संपादन, एक सेमिस्टर विजिटिंग स्कालर, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नौ महीने रे-माधव प्रकाशन में संपादक और इस अप्रैल 2007 से प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'हंस' का कार्यकारी संपादक।

प्रश्न 5 आप अपने मित्रों के बारे में कुछ बताइए।

❑ मेरे मित्र यूं तो पूरे देश भर में फैले हुए हैं और साहित्य तथा साहित्य की दुनिया से बाहर दोनों ही स्तरों के हैं। पढ़े लिखे भी, अल्पशिक्षित, अशिक्षित भी। कुछ नाम शिवमूर्ति, बलराम, रामचंद्र ओझा, रवीभूषण, प्रेमपाल शर्मा, ओम शर्मा, अनाथचंद्र, विजय आदि।

प्रश्न 6 जीवन के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है?

❑ एक साफ सुथरा खुशहाल जीवन दूसरों के सुख-दु:ख में काम आनेवाला मनुष्य से बड़ा कुछ नहीं।

प्रश्न 7 आपके साहित्यिक जीवन का आरंभ कब हुआ?

❑ यह कहना मुश्किल है। पहली कविता 'ड्रील', पर 1955 में तुकबंदी जैसी पहली कहानी 'परिवर्तन', 1957 हस्तलिखित पत्रिका 'पल्लव' में प्रारंभ में कविताएँ लिखी, कहानियाँ मेरे भैया लिखा करते थे। फिर 'दिनमान' में टिप्पणियाँ - 1971 से। 'सारिका' में पहली कहानी - 1976 (किस्सा एक बीमा कंपनी की एजेंसी का।)

प्रश्न 8 आपको लेखन की प्रेरणा कैसे मिली?

❑ माता-पिता स्कूल के शिक्षक, मित्र नरेन्द्रनाथ ओझा, भैया, रामजीवन प्रसाद के प्रोत्साहन और प्रेमचंद, सुदर्शन आदि की कहानियों से। बाद में कमलेश्वर जी, राजेन्द्र यादव और लगभग सभी संपादकों की, जनधर्मी संस्थाओं, मुक्ति आंदोलनों की प्रेरणाएँ मिलती रही, मित्रों की भी, 'दिनमान' जैसी पत्रिकाओं से भी।

प्रश्न 9 आपके उपन्यास में निम्न मध्यवर्ग और निम्नवर्ग अधिक चित्रित हैं, इसके मूल में क्या कारण है?

❑ पारिवारिक संस्कारों और प्रेरक शक्तियों के प्रभाव में दबे, कुचले, दोहित, शोषित, सामाजिक अन्याय के मारे हुए लोगों के दर्द और उस पीड़ा से मुक्ति के प्रयासों

की ओर आकृष्ट होना यह मेरी जैसी जमीन से उठकर आये निम्न मध्यवर्गीय लेखक के लिए स्वाभाविक ही था।

प्रश्न10 'सूत्रधार' उपन्यास लिखने की प्रेरणा कैसे मिली?

❑ 'सूत्रधार' हिंदी पट्टी के भोजपुरी नाटककार भिखारी ठाकुर के जीवन पर आधारित है। पहले मैं प्रवास की पीड़ा गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा-कथा के प्रति आकर्षित हुआ था। भिखारी का 'नाच' बचपन में देखा था मैंने। उसके उपजीव्य वही थे। फिर राजेंद्र यादव ने प्रेरित किया। अशिक्षित और एक अति पिछडी जर्गत (नाई) के होकर भी उन्होंने अपने नाच-नाटकों से दबी हुई पीड़ाओं को स्वर दिया और हिंदी पट्टी में नवजागरण के बीज बोये, वह भी लोक के स्तर पर यह कम महत्त्वपूर्ण न था। इसका मुझे बाद में संस्कृति विभाग (भारत सरकार) की फेलोशिप भी मिली।

प्रश्न11 'सूत्रधार' उपन्यास लिखने के पीछे आपका क्या उद्देश्य था? क्या वह साध्य हो गया?

❑ जैसे कि पहले प्रश्न 10 के उत्तर में मैंने कहा मैं लोकचेतना में व्याप्त नवजागरण के स्वर को पकड़ना चाहता था, वह विलक्षणता, वह जद्दोजहद, वह तो अपने स्तर पर काफी हद तक मैंने पूरा कर लिया। 'सूत्रधार' का हिंदी साहित्य में कुछ एक अपवादों को छोड़कर जैसा स्वागत हुआ है उससे भी लगता है, मैं लोकचेतना के सार्थवाह उस कलाकार की ओर व्यापक जनसमुदाय का ध्यान खींचने में सफल रहा, लेकिन ऐसे प्रयास समस्याओं के महासागर में एक बूंदभर हैं। फिर मात्र लेखन से रातोरात सब कुछ बदल नहीं जानेवाला। पर मैं इसकी यत्किंचित सफलता से संतुष्ट हूँ।

प्रश्न12 'सूत्रधार' के प्रमुख चरित्र भिखारी ठाकुर की आपकी दृष्टि से क्या चारित्रिक विशेषता है?

❑ अनपढ़ और अनगढ़ होते हुए भी लोकतत्वों और सामाजिक अंधेरों, विसंगतियों को उनकी देखकर पहचानने की अद्भुत क्षमता। बीस-बीस गाँवों और कोसों दूर से लोग उन्हें देखने, सुनने आते। कबीर और संत साहित्य के इक्का-दुक्का अन्य कवियों के बाद भिखारी ही लोकस्वर और लोकदृष्टि बन गये थे। जातिगत हीनता उनके पाँव में बेड़ियाँ ड़ालती लेकिन मनुष्य जब शौर्य और विवेक उन्हें आगे बढ़ने को ललकारता

था। उस समय 'बेटी वियोग', 'गबर घिचोर' जैसा लोकनाट्य लिखना दुस्साहस ही था। कई जगह मार खाते-खाते बचे, कई जगह बेटियों ने बूढ़े-वरों से विवाह करने से इन्कार कर दिया। कई जगह सामूहिक शपथें ली गई। यह एक अनहोनी ही थी।

प्रश्न 13 एक लोककलाकार होकर भी भिखारी ठाकुर जी ने जिस सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा की क्या वह उसमें सफल हुए?

❑ यद्यपि जोतिबा फुले जैसे नहीं थें भिखारी का अपने प्रयास में काफी हद तक सफल हुए। सूत्रपात तो उन्होंने कर ही दिया था। आज-कल विवाह या अनमेल विवाह का विरोधी करती 'बिलकिस' आदि लड़कियाँ 'वीरबालक' का राष्ट्रपति पुरस्कार पा रही है, यह उन्हीं जैसे लोगों के प्रयासों का विकास कहा जा सकता है। उन्होंने दिखा दिया कि अगर आप नेक काम करना चाहें तो तथाकथित जातिगत दबाव की हीनताएँ भी आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती।

प्रश्न 14 भिखारी ठाकुर इस चरित्र की 'बृहदता' आपकी दृष्टि से क्या है?

❑ पस्तदार जातिगत शोषण व्यवस्था के जिस निचले स्तर पर भिखारी ठाकुर थे, वहाँ से उन्हें पूरे समाज के कुसंस्कारों के विरूद्ध लड़ना था, पढ़े-लिखे भी नाम मात्र के ही थे, एक तरह से धूल या शून्य से ही अपनी यात्रा शुरू की उन्होंने और बिल्ली की तरह चतुराई से गोरिल्ला छापा मार जैसी लड़ाई लड़ते हुए खुद के होने को स्थापित किया और सामाजिक यथास्थिति के प्रति विश्लेषणात्मक चेतना अंकुरित की। यद्यपि उनसे पहले तुलसी भी यह काम कर चुके थे, मात्र तुलसी का साहित्य जात-पात फैलानेवाला सामंत-पुरोहित गढ़जोड का चाटण था, चेतनादायी और क्रांतिकारी नही। भिखारी ने तुलसी का ही अनुगमन किया था जातिघृणा पुरोहित-सामंत गढ़जोड़ के विरोध।

प्रश्न 15 सभी उपन्यासों में से आपको अपना कौन-सा उपन्यास प्रिय लगता है?

❑ सभी प्रिय है, पर उनमें भी सर्वाधिक प्रिय है 'पाँव तले की दूब'।

प्रश्न 16 आपने कोई समीक्षा ग्रंथ लिखा है?

❑ पुस्तकाकार नहीं, जो है, छिटपुट है।

प्रश्न 17 वर्तमान लेखक और उनके लेखन के बारे में आप क्या कहेंगे?

❑ लेखन एक तरह का आत्मप्रकाश और व्यष्टि का समष्टि में संप्रसारण है। आज के लेखक और लेखन पर मनुष्य, व्यष्टि या समष्टि नहीं, बाजार का प्रभाव हावी है। आचार्य विश्वनाथ ने 'यश' को भी लिखने (काव्य लेखन) का एक कारण बताया था। आज यश और पैसा, ... तुरंत फल, समृद्धि, मांग के अनुसार उत्पादन ... या फिर पश्चिमी या स्पैनिश, लैटिन, अमरिकी लेखन के प्रभाव में डूब जाने का फैशन, कुल मिलाकर 'हौचपौच' की स्थिति है और सरोकार छूटते जा रहे हैं।

फिर भी पर यह नई पीढ़ी का संपूर्ण चरित्र नहीं है, नया लेखन उम्मीदें भी बंधा रहा है।

प्रश्न 18 आपको अब तक कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया है?

❑ छोटे-छोटे तो कई हैं, कुछ चर्चित पुरस्कार इस प्रकार है -

1. सारिका सर्वभाषा कहानी प्रतियोगिता - 1980
   प्रथम पुरस्कार 'अपराध' कहानी पर
2. प्रथम कथाक्रम सम्मान, लखनऊ - 1997
3. गणमित्र सम्मान, रानीगंज - 1996
4. प्रेमचंद सम्मान, कोलकाता - 2003
5. भिखारी ठाकुर लोकसम्मान - 2004
6. इन्दु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान, लंदन - 2001
7. पहल सम्मान - 2006

✻ ✻ ✻ ✻

परिशिष्ट 2

डॉ. रवींद्र ठाकुर से लिया हुआ साक्षात्कार

प्रश्न 1 आपलं बालपण कुठं गेलं? (आपका बचपन कहाँ बीता?)

- माझा जन्म 14 एप्रिल, 1955 जळगांव जिल्ह्यामध्ये, उत्तराण तालुका येरोडल मध्ये झाला आणि बालपणही तिथंच गेलं.

  (मेरा जन्म 14 अप्रैल 1955 जलगांव जिले के उत्तराण, तालुका येरोड़ल में हुआ और वहीं पर बचपन बीता।)

प्रश्न 2 आपलं शिक्षण कुठं झालं? (आपकी शिक्षा कहाँ हुई?)

- उत्तराण मध्येच प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षण मी पूर्ण केलं. संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय, सुळगांव, जिल्हा औरंगाबाद येथे बी.ए.पर्यंत शिक्षण घेतलं. नंतर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विद्यापीठ, औरंगाबाद येथे एम.ए. पूर्ण केलं. असं माझं हे शिक्षण.

  (उत्तराण में ही प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा मैंने पूर्ण की। संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय, सुलगांव, जिला औरंगाबाद में बी.ए. तक की शिक्षा ली। बाद में डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से एम.ए. पूरा किया। ऐसी यह मेरी शिक्षा।)

प्रश्न 3 तुमच्या साहित्यिक जीवनाचा प्रारंभ केव्हा झाला? (आपके साहित्यिक जीवन का आरंभ कब हुआ?)

- मला वाटलं आणि मी लिहित गेलो. लहानपणांपासून वाचनाची आवड. ठरवून असं काही केलं नाही. सुरूवातीला कविता केल्या. एक वय असतं कविता करण्याचं. बी.ए.ला असताना, एम.ए.ला असताना अशा कविता लिहित गेलो. नंतर बरेचसे समीक्षाकडे वळलो. संशोधनही केलं. मग कथा, ललित लेख असे लिहित गेलो.

  (मुझे लगा और मैं लिखता गया। बचपन से पढ़ने की रूचि। सोचकर कुछ नहीं किया। शुरू में कविताएँ की। एक उम्र होती है कविता करने की। बी.ए.में तथा एम.ए. में इस प्रकार कविता लिखता गया। फिर समीक्षात्मक लेखन की तरफ बढ़ा। आगे संशोधन भी किया। फिर कथा, ललित लेख इस प्रकार लिखता गया।)

प्रश्न 4 लेखनाची प्रेरणा कशी मिळाली? (आपको लेखन की प्रेरणा कैसे मिली?)

❑ वेगवेगळे विषय समोर होतेच. फुल्यांवर चांगलं लेखन झालं नव्हतं. करावं ते चांगलं करावं म्हणून 'महात्मा'चं लेखन केलं. याचं नंतर आकाशवाणीवर प्रसारणसुद्धा झालं. त्याला खूप प्रसिद्धी सुद्धा मिळाली. पुन्हा 'धर्मयुद्ध' ही कर्णावरती आधारित कादंबरी. तसंच साहित्य-संमेलन यावर सावळा गोंधळ मांडणारी, 'उद्या पुन्हा हाच खेळ' लिहिली. यामध्ये माणसांच्या मनातील द्वेष, मत्सर, शहाणपण, हेवे-दावे अशा प्रकारे असतात याचंच चित्रण आहे. आता शिक्षण क्षेत्रातील अंदाधुंद मांडणारी नवीन कादंबरी 'वायरस' येत आहे. ज्यामध्ये जातिपातीचा भस्मासूर कसा सगळं गिळंकृत करण्यास टपलाय, तसेच अल्पसंख्यांक लोक कसे यात भरडले जात आहेत, यावरच 'वायरस' कादंबरी आधारित आहे, ज्यामध्ये जात हाच 'वायरस' आहे.

(अलग-अलग विषय सामने थे ही। फुले पर अच्छा लेखन नहीं हुआ था। जो करना है वह अच्छा ही करना है। इस बात को लेकर 'महात्मा' का लेखन कर दिया। इसका बाद में आकाशवाणी पर प्रसारण भी हुआ और उसे बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। फिर 'धर्मयुद्ध' यह कर्ण पर आधारित उपन्यास। वैसे ही साहित्य-संमेलन के गोलमाल पर आधारित 'उद्या पुन्हा हाच खेळ' लिख दिया। इसमें मनुष्य के मन का द्वेष, मत्सर, आपस के झगड़े आदि का चित्रण है। अब शिक्षा के क्षेत्र में चल रही बेपरवाई को प्रस्तुत करनेवाला नया उपन्यास 'वायरस' आ रहा है, जिसमें जाति-पाँति का भस्मासूर किस तरह से सब कुछ निगलने के लिए बैठा है, वैसे ही अल्पसंख्यांक लोग इसमें किस कदर पीस रहे हैं इस पर ही 'वायरस' उपन्यास चित्रित है। जात यही इसमें 'वायरस' है।)

प्रश्न 5 आतापर्यंत आपला साहित्यिक प्रवास कसा राहिला? (अब तक का आपका साहित्यिक सफर कैसे रहा?)

❑ 'अनिकेत' हा माझा पहिला कविता संग्रह सन 1981 ला प्रकाशित झाला. आतापर्यंत 15-16 पुस्तके प्रकाशित आहेत. त्यामध्ये दोन कविता संग्रह, दूसरा कविता संग्रह 'दस्तुरखुद' जो 2004 मध्ये प्रकाशित झाला. कादंबरीमध्ये 'महात्मा' 1999, 'उद्या पुन्हा हाच खेळ' 1999, 'धर्मयुद्ध' 2003 इ. प्रकाशित आहे. आणि समीक्षांमध्ये 'मराठी ग्रामीण कादंबरी', 'साहित्य : समीक्षा आणि संवाद' अनेक समीक्षा असा साहित्यिक प्रवास चालूच आहे.

('अनिकेत' यह मेरा पहला काव्यसंग्रह सन् 1981 में प्रकाशित हुआ। अब तक 15-16 पुस्तक प्रकाशित हुए हैं। उनमें दो काव्यसंग्रह हैं, दूसरा काव्यसंग्रह 'दस्तुरखुद' जो 2004 में प्रकाशित हुआ। उपन्यासों में 'महात्मा' सन् 1999, 'उद्या पुन्हा हाच खेळ' 1999, 'धर्मयुद्ध' 2003 में प्रकाशित हो गए हैं और समीक्षा में 'मराठी ग्रामीण कादंबरी', 'साहित्य : समीक्षा आणि संवाद' जैसी समीक्षाएँ हैं, इस तरह साहित्यिक सफर चल रहा है।)

प्रश्न 6 मी आपल्या परिवारासंबंधी जाणू इच्छिते. (मैं आपके परिवार के बारे में जानना चाहती हूँ।)

❑ माझ्या घरामध्ये मी, माझी पत्नी सौ. नलिनी, मुलगी शर्मिष्ठा आणि मुलगा असं चार जणांचं चौकोनी कुटुंब. माझी पत्नी सौ. नलिनी यांचं शिक्षण 12वी पर्यंतचं. तिला शिक्षणापेक्षा घरकामामध्येच अधिक आवड आहे. तर मुलगी शर्मिष्ठा हिचं एम.ए., बी.एड. (इंग्रजी) असं शिक्षण झालेलं आहे. मुलगा पुण्याला असतो. त्याचं 12वी नंतर ॲनिमेशनचं काम आहे.

(मेरे घर में मैं, मेरी पत्नी श्रीमती नलिनी, बेटी शर्मिष्ठा और बेटा ऐसे चार लोगों का परिवार है। मेरी पत्नी श्रीमती नलिनी जी की शिक्षा 12वी तक है। उसे शिक्षा से अधिक घर के कामों में जादा रूचि है। बेटी शर्मिष्ठा का एम.ए., बी.एड. (अंग्रेजी) हुआ है। बेटा पुना में ॲनिमेशन का काम करता है।

प्रश्न 7 आपल्या नोकरीविषयी थोडंफार सांगा. (आप अपनी नौकरी के बारे में कुछ बताइए।)

❑ माझी नोकरी म्हणशील तर, सगळ्यात प्रथम लातुर जिल्ह्यात मा. मास्टर दीनानाथ मंगेशकर कॉलेज, औराद शहाजानी इथं 2 वर्ष ज्युनिअर पर प्राध्यापक म्हणून काम केलं. पुढं उदयगिरी कॉलेज, उद्‌गीर येथे 4 वर्षे, त्यानंतर यशवंतराव चव्हाण कॉलेज, कोल्हापूर येथे मराठीचा प्राध्यापक म्हणून काम केलं. त्यानंतर शिवाजी विद्यापीठाच्या मराठी विभागात प्राध्यापक म्हणून कार्य चालू आहे. अजून 6-7 वर्ष नोकरी आहे.

(मेरी नोकरी के बारे में बताना है तो सबसे पहले लातुर जिले के मा. मास्टर दीनानाथ मंगेशकर कॉलेज, औराद शहाजानी यहाँ 2 वर्ष ज्युनिअर पर प्राध्यापक के लिए, आगे उदयगिरी कॉलेज, उद्गीर में 4 वर्ष काम किया। उसके बाद यशवंतराव चव्हाण कॉलेज, कोल्हापुर में मराठी का प्राध्यापक इस नाते काम किया। उसके बाद शिवाजी विश्वविद्यालय के मराठी विभाग में प्राध्यापक का कार्य शुरू है। अभी 6-7 वर्ष नौकरी है।)

प्रश्न 8 'महात्मा' कादंबरी लिहिण्याची प्रेरणा कशी मिळाली? ('महात्मा' उपन्यास लिखने की प्रेरणा कैसे मिली?)

❑ या लेखनाकडे मी वळलो म्हणजे म.फुले यांच्या जीवन चरित्राविषयी कांही ललित लेखन यापूर्वी झालं होतं. त्यातलं जे काही मी वाचलं ते मनात असमाधान निर्माण करून गेलं. ते असमाधान मी वेळोवेळी मित्रांजवळ व्यक्त करू लागलो. चर्चेचा विषय नसला तरी त्याच विषयावर बोलणं होई. त्यातूनच ते म्हणाले, 'मग तूच का लिहित नाहीस?' मग मनात आलं की आपणच काहीतरी लिहावं. काहीतरी लिहिलेच पाहिजे, असे तीव्रतेने वाटू लागले आणि ही चरित्रात्मक कादंबरी लिहायचा मी निर्णय घेतला.

(इस लेखन की तरफ मैं बढ़ा क्योंकि फुले के जीवन चरित्र पर कुछ ललित लेखन इसके पूर्व हुआ है। उसमें से कुछ मैंने पढ़ा है, जिससे मन में असंतोष निर्माण हो गया। यह असंतोष मैं बार-बार मेरे मित्रों के सामने व्यक्त कर देता। बातचित का विषय न होते हुए भी मेरी उसी विषय पर चर्चा होती। तभी सभी ने मुझसे कहा कि, 'फिर तुम ही कुछ लिखते क्यों नहीं?' फिर मन में आया कि मैं ही क्यों न कुछ लिख डालूँ। कुछ तो लिखना ही चाहिए ऐसा लगने लगा और फिर इस चरित्रात्मक उपन्यास को मैंने लिखना शुरू कर दिया।)

प्रश्न 9 'महात्मा' कादंबरी लिहिण्यामागे आपला कोणता उद्देश्य होता? तो साध्य झाला का? ('महात्मा' उपन्यास लिखने के पीछे आपका कोई उद्देश्य था? वो पूरा हो गया क्या?)

❑ फुलेंचं जीवनचरित्र खऱ्या अर्थाने समाजासमोर आणण्याचा उद्देश्यच समोर होता. प्रत्यक्षात त्यांनी केलेलं कार्य लोकांपर्यंत पोहचवावं हा हेतू होता. फुले, शाहू,

आंबेडकर यांचे विचार लोकांपर्यंत पोहचावे आणि माझा हा उद्देश्य साध्य सुध्दा झाला. प्रतिक्रिया चांगली मिळाली, सर्वसामान्य वाचकांपर्यंत, सर्वसामान्य समाजापर्यंत फुलेंचे विचार पोहचले.

(फुले जी का जीवनचरित्र सही अर्थ से समाज के सामने लाना यही उद्देश्य था। प्रत्यक्ष उन्होंने किया कार्य लोगों तक पहुँचाना यह हेतु था फुले, शाहु, आंबेडकर इनके विचार लोगों तक पहुँचाना और मेरा यह उद्देश्य सफल भी हो गया। प्रतिक्रियाएँ अच्छी मिली। सर्वसामान्य लोगों तक, समाज तक फुले जी के विचार पहुँच गए।)

प्रश्न10 'महात्मा' चे प्रमुख चरित्र महात्मा जोतीराव फुले यांची तुमच्या दृष्टीने कोणती चारित्रिक विशेषता होती? ('महात्मा' के मुख्य चरित्र महात्मा जोतिराव फुले की आपके दृष्टि से कौन-सी चारित्रिक विशेषता थी?)

❑ महात्मा फुलेंच्या चरित्रांबद्दल सांगायचं तर हा माणूस दीडशे वर्षापूर्वी विज्ञाननिष्ठ दृष्टिकोनातून पहात होता. स्त्री समतेचा विचार ज्यानं मांडला आणि नुसता मांडलाच नाही तर तो प्रत्यक्षात साकार सुध्दा केला. आज सुध्दा स्त्री शिक्षणाबद्दल कित्येक ठिकाणी उदासी दिसते. पण फुलेंनी त्या काळात हे कार्य केलं. दुसरी गोष्ट म्हणजे फुलेंचा मानवतावाद. विधवा पुनर्विवाहास प्रोत्साहन देण्यापासून ते त्यांच्या मुलांसाठी केलेलं काम. त्या काळातील समाज केवढा छळायचा विधवांना, अशा सनातनी समाजात राहून जोतीरावांनी आपले हे काम चालू ठेवले. आपल्या घरामध्ये विधवांना निवारा देऊन त्यांचं बाळंतपण करण्यापर्यंत फुलेंनी कार्य केलं. त्यांच्या घरात 35 ब्राह्मण विधवा बाळंत झाल्या. पुढे त्या मुलांचं संगोपन करणे, त्यांच्या शिक्षणापर्यंत सगळ्या गोष्टींचा विचार फुले करत. त्यांच्या चरित्रातील हे गुण अतिशय महत्त्वपूर्ण आहेत.

(महात्मा फुले के चरित्र के बारे में कहना है तो यह व्यक्ति डेढ़ सौ वर्ष पूर्व विज्ञाननिष्ठ दृष्टिकोण से देख रहा था। स्त्री समता का विचार जिसने रचा और न सिर्फ रचा तो उसे प्रत्यक्ष साकार भी किया। आज भी स्त्री शिक्षा के बारे में कहीं जगहों पर उदासी दिखती है लेकिन फुले ने उस समय यह कार्य किया। दूसरी बात यह की, फुले जी का मानवतावादी दृष्टिकोण। विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन करने से लेकर उनके बच्चों के लिए किया कार्य। उस समय में समाज कितना अत्याचार करता था। विधवाओं

का ऐसे सनातनी समाज में रहकर जोतीराव जी ने अपना यह कार्य किया। अपने घर में विधवाओं को आसरा देकर उनके बच्चा होने तक पूरा कार्य किया। उनके घर में 35 ब्राह्मण विधवाओं ने अपने बच्चों को जन्म दिया। आगे उन बच्चों का पालन-पोषण, उनकी शिक्षा आदि सभी बातों का विचार फुले जी करते थे। इनके चरित्र की यह विशेषता महत्त्वपूर्ण है।)

प्रश्न11 महात्मा फुले या चरित्रांची बृहदता तुमच्या दृष्टीने कोणती? (महात्मा फुले इस चरित्र की 'बृहदता' आपकी दृष्टि से कौन-सी है?)

❑ जेव्हा सगळे लोक परंपरेला धरून होते त्यावेळेला एकटाच असा हा व्यक्ति होता की जो या परंपरांचा विरोध करीत होता. स्वत:चं मत तो मांडत होता. लोकांच्या सुरात तो सूर मिसळत नव्हता आणि या सर्वांचा विरोध करून त्यानं आपलं कार्य पुढं चालवलं. प्रत्यक्ष कृतिला महत्त्वपूर्ण मानलं आणि या परंपरांच्या बाबतीत म्हणशील तर यांना छेद हा द्यायलाच पाहिजे. परंपरेला छेद देणारा हा माणूस असाधारणच होता.

(जब सभी लोग परंपरा को साथ लेकर चल रहे तब सिर्फ एक ही यह व्यक्ति थी जिसने इस परंपरा का विरोध किया। खुद का मत वह व्यक्त करता था। लोगों के सूर में सूर नहीं मिला रहा था और यह सभी का विरोध सहन कर के भी अपना कार्य आगे बढ़ाता रहा। प्रत्यक्ष कार्य को महत्त्वपूर्ण मानता था और परंपरा के बारे में कहोगी तो इसे कही-न-कही छेद देना आवश्यक ही है। परंपरा को छेद देनेवाला यह व्यक्ति निश्चित ही असाधारण ही था।)

प्रश्न12 'महात्मा' लिहितानाचा अनुभव कसा होता? ('महात्मा' के लेखन का अनुभव कैसा रहा?)

❑ 'महात्मा' लिहिताना मी पूर्णपणे 19व्या शतकात ज्या वातावरणात होतो. कारण ते वातावरण आजच्या स्थितीत क्रियेट करणं सोपं नव्हतं. सतत कच्चं लेखन, पक्कं लेखन करणे आणि त्याच वातावरणात स्वत:ला नेणं हेच सुरू होतं. त्यावेळी जेवण-खाण, पाणी, झोप कांही सुचत नव्हतं. मी आणि माझं लेखन ह्यातच मी पूर्णपणे गुंतलो होतो. घरच्या सगळ्या जबाबदाऱ्या मी 'सौ' कडे सोपविल्या होत्या.

('महात्मा' लिखते समय मैं पूरी तरह से 19वीं सदी के उस वातावरण में था,

क्योंकि वह वातावरण आज के स्थिति में क्रियेट करना कठिन है। हमेशा कच्चा लेखन, पक्का लेखन और उसी वातावरण में खुद को ले जाना यही शुरू था। तब खाना-पीना-सोना कुछ सूझता नहीं था। मैं और मेरा लेखन इसमें ही मैं पूरी तरह से उलझता गया। घर की जिम्मेदारी मैंने अपने श्रीमती जी पर सौंप दी थी।

प्रश्न13 'महात्मा' लिहिल्यानंतरचा अनुभव कसा होता? ('महात्मा' लिख देने के बाद कैसा अनुभव हुआ?)

❑ मानसिक समाधान मिळाले. कारण लेखन करून जास्त आर्थिक लाभ होतच नाही. कारण इथं 'धन' प्रकाशकांकडे आणि 'मान' लेखकांकडे राहतो. या लेखनातून बारा हजार मिळाले.

(मानसिक समाधान प्राप्त हुआ क्योंकि लेखन से आर्थिक लाभ अधिक नहीं मिल पाता। यहाँ 'धन' प्रकाशक के पास रहता है और 'सम्मान' लेखक के पास। इस लेखन से बारा हजार रूपये मिले थे।)

प्रश्न14 'महात्मा' मध्ये फुलेंच्या अंत्यसंस्कार त्यांच्या मृत्युपत्रात सांगितल्याप्रमाणे नाही, हे कसे? ('महात्मा' में फुले के अंतिम संस्कार, उनके मृत्युपत्र में बताए हुई बातों की तरह नहीं है, यह कैसे?)

❑ होय. फुल्यांनी मृत्युपत्रात सांगितले होते की, मृत्युनंतर मला पुरा, पण त्या स्थितीत कलेक्टरनी परवानगी दिली नाही. बऱ्याच तांत्रिक अडचणी आल्या. या गोष्टींबद्दल बरेचसे पुरावे प्राप्त झाले आहेत. काही गोष्टींचा जरी स्पष्ट उल्लेख मिळत नसला तरी हिंदू परंपरा काय सांगते? हे महत्त्वाचं. यशवंत हा त्यांचा दत्तक मुलगा होता. म्हणून प्रथा परंपरांचा उल्लेख असेल आणि त्यानंच चितेला अग्नी दिला.

(जी हाँ! फुले ने मृत्युपत्र में बताया था कि 'मृत्यु के बाद उनका दफन हो' लेकिन उस स्थिति में कलक्टर ने अनुमति नहीं दी। बहुत सी तांत्रिक बाधाएँ आ गई इसके लिए बहुत से सबुत मिल जाते हैं। कुछ बातों का अगर स्पष्ट उल्लेख नहीं फिर भी हिंदू परंपरा क्या बताती है, यह महत्त्वपूर्ण है। यशवंत उनकी गोद ली संतान थी। इसलिए प्रथा परंपरा का यहाँ वर्णन है और उसीने ही उनकी चिता को अग्नी दी।)

प्रश्न15 जीवनाबद्दल तुमचा दृष्टिकोन काय आहे? (जीवन के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?)

❑ जीवनात आपल्याला काय करायचं असेल तर ते चांगलंच करावं. आयुष्यात पैसा कमवणं हे माझं कधीच उद्दीष्ट नव्हतं आणि नाही सुध्दा. तर आयुष्यात 'नाव कमवणं' हेच उद्दिष्ट आहे. कारण नाव कमवणं तसं खूप अवघड आहे. कारण ते कमवताना खूप कष्ट घ्यावे लागतात. कमवणं जास्त अवघड, तर गमवणं खूप सोपं. माझ्या बाबतीत म्हणशील तर, या जीवनात सकारात्मक दृष्टिकोन ठेवूनच आपलं पाऊल उचलावं. या शिक्षणक्षेत्रातच काहीतरी करावं ही माझी इच्छा आहे.

(जीवन में हमें कुछ करना है तो वह अच्छा ही हो। जिंदगी में पैसा कमाना मेरा उद्देश्य कभी नहीं रहा। जिंदगी में नाम कमाना यही उद्देश्य रहा क्योंकि नाम कमाना बहुत कठीन है। उसे कमाते वक्त बहुत कष्ट सहन करना पड़ता है। कमाना बहुत कठिन है, तो गवाँ देना बहुत आसान। मेरे बारे में कहती हो तो जीवन की तरफ सकारात्मक दृष्टि रखकर ही अपने पाँव उठाये हैं। इस शिक्षा के क्षेत्र में ही कुछ करने की मेरी आकांक्षा है।)

प्रश्न16 आतापर्यंतच्या तुमच्या लेखनात तुम्हाला आवडलेली कृति कोणती? (आज तक के आपके लेखन में आपको सबसे अधिक कौन-सी कृति पसंद है ?)

❑ अर्थात् 'महात्मा' हीच.

(सच में 'महात्मा' ही।)

* * * *

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ - सूची

(अ) आधार ग्रंथ - हिंदी

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवं संस्करण
1.	संजीव	सूत्रधार	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी-17, जगतपुरी, दिल्ली - 110 051 प्रथम संस्करण - 2003

(ब) आधार ग्रंथ - मराठी

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
2.	ठाकुर (डॉ.) रवींद्र	महात्मा	मेहता पब्लिशिंग हाऊस, 1941, सदाशिव पेठ, माडीवाले कॉलनी, पुणे-30 प्रथम संस्करण - 1999

(क) संदर्भ ग्रंथ - हिंदी

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
3.	बावा (डॉ.) ऋता	उपन्यास के सिद्धांतों का विकास और विवेचन	पुष्पान्जलि प्रकाशन, एल/46, गली नं.5, शिवाजी मार्ग करतार नगर, दिल्ली-110 053 प्रथम संस्करण - 2001
4.	हडसन डब्ल्यू.एच.	ॲन इन्ट्रॉडक्शन टू द स्टडी ऑफ लिटरेचर	लंडन जॉर्ज जी. हॅपरन्ड को-लिमिटेड 1960
5.	जेन्म हेन्सी	टाईम ॲण्ड नॉवेल	न्यू जेस्सी प्रिन्सेक्शन, युनिव्हर्सिटी प्रेस 1978

अ.क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
6.	लैबैक पर्सी	द क्राफ्ट ऑफ फिक्शन	लंदन, जोनाठान केप, 1955
7.	प्रेमचंद	साहित्य का उद्‌देश्य	प्रेमचंद रचना संचयन, शिवरानी प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1954
8.	प्रेमचंद	कुछ विचार	सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद 1961
9.	सिंह नामवर	वाद-विवाद संवाद	इलाहाबाद
10.	सिंह (डॉ.) त्रिभुवन	हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग	हिंदी प्रचारक संस्थान (व्यवस्था-कृष्णचंद बेरी एण्ड सन्स), पो.बॉ.नं. 106, पिशाचमोचन, वाराणसी-1 प्रथम संस्करण - फरवरी 1973
11.	टंडन प्रतापनारायण	हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास	हिंदी साहित्य भंडार, 55 चौपाटियाँ रोड चौक लखनऊ-3 द्‌वितीय संस्करण - मार्च 1964
12.	त्रिगुणायत गोविंद	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्‌धांत	एस् चन्द एण्ड कंपनी (प्रा.) लि., रामनगर, नई दिल्ली - 110 055
13.	वर्मा धीरेन्द्र	हिंदी साहित्य कोश (भाग 1)	ज्ञानमण्डल लि. प्रधान सम्पादक डॉ.धीरेन्द्र वर्मा, द्‌वितीय संस्करण - 2020 विक्रम संवत

(ड) हिंदी शब्द कोश

अ.क्र.	संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
14.	आपटे वामन शिवराम	संस्कृत हिंदी कोश	न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, काशीराम मार्केट, दुर्गा काम्पलैक्स, दिल्ली। पंचम संस्करण : 2001
15.	नवल जी	नालन्दा विशाल शब्द सागर	आदिश बुक डिपो, 7 ए/29, डब्ल्यु.इ.ए. करौलबाग, नई दिल्ली - 5 प्रथम संस्करण : 1988
16.	बाहरी(डॉ.) हरदेव	राजपाल हिंदी शब्द कोश	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली उन्नीसवां संस्करण : 2004
17.	वसु नगेंद्रनाथ	हिंदी विश्वकोश (नवम् भाग)	बी.आर. पब्लिकेशन कार्पोरेशन, 461, विवेकानंद नगर, दिल्ली-52 प्रथम संस्करण : 1986

(इ) मराठी शब्दकोश

अ.क्र.	संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
18.	गणोरकर प्रभा	संक्षिप्त मराठी वाङ्.मय कोश	हर्ष भटकळ, जी.आर.भटकळ पाऊण्डेशन, 351सी, पं.मदन मोहन मालवीय मार्ग, मुंबई - 400 034 प्रथम संस्करण : मार्च 2003

(फ) अंग्रेजी शब्दकोश

अ.क्र.	संपादक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
19.	Chief Editor Cowie A.P.	Oxford Advanced Lerner's Dictionary	Oxford University, Press Fourth Edition - 1989
20.	Editor in Chief Gore P.B.	Webster's Third New International Dictionary of the English Language Unabridged	London : G Bell and Sons LTD., Springfield, Mass-G & C, Merriam C.O. Fourteenth Edition - 1961

(ग) पत्र-पत्रिकाएँ

अ.क्र.	संपादक का नाम	पत्रिका का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
21.	श्री.प्रतापसिंह जाधव	बहार	31 अक्तूबर, 1999
22.	आनन्द बहादुर	परस्पर	जुलाई, 2006
23.		साहित्य हिंदुस्तान धनबाद	मंगलवार, 15 अगस्त, 2006
24.	राजेन्द्र यादव	हंस	नवंबर, 2003

****

891.433
KUM
T15508